वार्तालाप–445, भिलाई (एम.पी), दिनांक–19.11.07
Disc.CD-445, dated 19.11.07 at Bhilai (Madhya Pradesh)

समय – 11.50
जिज्ञासु – बाबा, जिन बच्चों की तकदीर जगी हुई है उसकी निशानी क्या होगी?
बाबा – आते ही बाप को पहचान लेंगे। ज्ञान में आते ही फट से पहचानेंगे। ऐसे नहीं कि रगड़–रगड़ करें, ''नहीं नहीं, ये बात हमको समझ में नहीं आती, वो बात समझ में नहीं आती। हम नहीं चलेंगे।'' आये और तुरंत स्वाहा।
जिज्ञासु – संदेश मिला और दो दिन में ही कम्पिल पहुँच गए।
बाबा – हां, पूर्व जन्मों का जो, उनका संग का रंग है वो उनको खींच लेता है। जिन्होंने पूर्वजन्म में लिया ही नहीं है राम–कृष्ण की आत्माओं से वो फिर दूर ही पड़े रहते हैं।
Time: 11.50
Student: Baba, what will be the indication of the children whose fortune has already awakened?
Baba: They will recognize the Father as soon as they come. They will recognize (the Father) as soon as they enter the path of knowledge. It is not as if they will argue, "No, no, I cannot understand this topic, I cannot understand that topic. I will not follow (this path of knowledge)". As soon as they come they will sacrifice themselves.
Student: As soon as they received the message, they reached *Kampil* within two days.
Baba: Yes, their color of the company of the previous births pulls them. Those who have not at all taken (the color of) company of the souls of Ram and Krishna in the past births do remain distant.

समय – 26.33
जिज्ञासु – बाबा, सीड़ी में बोला है चलते–फिरते याद में रहो। चलते–फिरते याद में रहो। तो इसका क्या अर्थ है बाबा?
बाबा – नहीं हो सकती प्रैक्टीस ऐसी?
जिज्ञासु – जैसे अपन बैठ के भी मान लिजिए योग करते हैं। वो किसके लिए बोला गया है?
बाबा– बैठकर योग जो करते है वो तो एक प्रैक्टीस पड़ गई। 63 जन्म की गुरुओं की सिखाई हुई। कि बैठके याद करना है। लेकिन हम कर्मयोगी हैं या सन्यासयोगी हैं?
जिज्ञासु – कर्मयोगी।
Time: 26.33
Student: Baba, it has been said in a CD, "Stay in remembrance while walking and moving. Stay in remembrance while walking and moving." So, what does it mean Baba?
Baba: Can't one practice like this?
Baba: For example we sit and do *yog*. For whom has that been said?
Baba: Sitting and doing *yog* is a practice that we have developed which has been taught by *gurus* for 63 births that we have to sit and remember. But are we *karmayogis* or *sanyasyogis*?
Student: *Karmayogis.*

बाबा – हमारा कर्म भी हो साथ–साथ और फिर याद भी हो साथ–साथ। योग और कर्म दोनों साथ चले। हमारी प्रवृत्ति है।
जिज्ञासु – और अमृतवेले में?
बाबा – अमृतवेले में कोई धंधा नहीं होता है। कोई धंधा है किसीको तो करे। तो नींद भी उड़ जाएगी। अमृतवेले में भी अगर किसीको कोई धंधा है। तो करने के लिए मना थोड़े ही है। मान लो कोई को ट्रान्सलेशन का काम है। अमृतवेले किया जा सकता है कि नहीं किया जा सकता है। अब उस समय ट्रान्सलेशन करते जाओ बाबा की याद करते जाओ।

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Baba: Out actions and remembrance should be simultaneous. *Yog* and *karma* should go simultaneously. Ours is a path of household.
Student: And what about at *amritvela*?
Baba: There is no work to do at *amritvela*. If someone has any work, then he can do that. Then sleep will vanish as well. If anyone has any work to be done at *amritvela* as well, there is no restriction on performing it. Suppose someone has a job of translation. Can it be done at *amritvela* or not? Then at that time, go on doing translation and go on remembering Baba.

जिज्ञासु – माना बाबा विकर्म विनाश करने के लिए बैठके स्पेशल याद करने की जरूरत नहीं है। चलते–फिरते काम काज करते याद करने से ही विकर्म विनाश हो सकते हैं।
बाबा – सवेरे को जिनको कोई धंधा नहीं है। जैसे माताऐं है। खाना तो सबेरे को ही बनाना है। रात को 12 बजे, 2 बजे, 3 बजे बनाके रख देंगे। तो वो तो उतना अच्छा नहीं है। तो वो बैठेंगे ही। याद में बैठेंगे।
Student: Does it mean Baba that there is no need to sit in special remembrance to destroy the sins. Sins can be burnt by remembering (Baba) while just walking and moving and while performing actions.
Baba: Those who do not have any work in the morning. For example, the mothers. They have to cook the meals in the morning. It is not that good if they will cook it at 12 O'clock, 2 O'clock, 3 O'clock of the night and keep it. So, they will certainly sit. They will sit in remembrance.

जिज्ञासु – मैं ये पूछ रही हुँ बाबा कि विकर्म विनाश करने के लिए। जो जन्म–जन्मांतर का बोझा है। उसको समाप्त करने के लिए स्पेशल योग अग्नि में जैसे बैठकर करना आवश्यक है या चलते–फिरते करने से ही हो सकता है खतम?
बाबा– चलते–फिरते याद कर रहे हैं इसका मतलब उनकी प्रैक्टीस अच्छी पड़ गई है। उन्होंने ज्यादा बढ़िया प्रैक्टीस कर ली है। और जो सिर्फ बैठकरके ही याद कर रहे है तो उनकी प्रैक्टीस बैठकरके ही याद करने की पड़ेगी या चलते–फिरते याद करने की पड़ेगी? जैसे कोई गीत लगाके याद कर रहे हैं तो प्रैक्टीस गीत लगाके याद करने की पड रही है या बिना गीत के भी याद करने की प्रैक्टीस पड रही है? वो तो आदत पड़ जाती है।
Student: Baba I am asking that for the purpose of burning the sins, the burden of many births; in order to finish that is it necessary to sit in a special fire of *yog* or can it be burnt while just walking and moving around?
Baba: Those who are remembering while walking and moving around, then it means that their practice has become nice. They have practiced it in a better way. And those who are remembering only while sitting at home then will they develop a practice of remembering just while sitting or of remembering while walking and moving around? Suppose those who are playing a song for remembering , then are they developing a practice of remembering while playing a song or are they developing a practice of remembering (Baba) without (the help of) songs? So, they develop that habit.

जिज्ञासु – नहीं बाबा, ये कहना चाहते है की जो विकर्म विनाश होंगे वो बैठे–बैठे होंगे या चलते–फिरते होंगे? जैसे बी.के. में कहते थे की ज्वाला स्वरूप योग होना चाहिए।
बाबा– तो हुआ बी.के. का ज्वाला स्वरूप योग?
जिज्ञासु – नहीं बाबा। तो वो ही जानना चाहते हैं। कि सहज ढंग से हो सकता है या उसके लिए कठिन मेहनत करना है?
Student: No Baba, she wants to say that will the sins be destroyed while sitting (and remembering) or will they be destroyed while walking and moving around? For example, in BK they used to say, "the *yog* should be a like the form of flame."
Baba: So, did you achieve the flame-form *yog* as said by the BKs?

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Student: No, Baba. That is what I want to know that is it in a easy way or do we have to do hard work for that?

बाबा – बैठकरके याद करना माना कर्म छोड़ दिया। सिर्फ योग को पकड़ लिया। लेकिन है क्या? नाम क्या है? कर्मयोग। तो कर्म करते हुए याद आती रहे वो सहज याद है या बैठकरके खींच–खींच के याद कर रहे हैं। याद आ नहीं रही है। तकलीफ हो रही है। या टँगों में दर्द हो रहा है। तो कठिन योग हुआ या सहज योग हुआ?
जिज्ञासु – कठिन। और यदि समय है तो बैठकरके भी आराम से याद कर सकते है ना।
बाबा – हाँ, तो बात दूसरी है। जैसे माताओं को सवेरे कोई काम नहीं है बैठके याद करें। लेकिन याद भी तब ही करेंगे जबकि प्यार होगा। पेहचान होगी। और प्यार तो शरीर के साथ ही होता कि बिना शरीर के होता है? शरीर के साथ ही प्यार होता है।
Baba: Sitting and remembering means you have renounced actions. You just caught hold of *yog*. But what is it? What is the name? *Karmayog* (remembrance while performing actions). So, is it an easy remembrance if someone keeps remembering while performing actions or is it a difficult *yog* or an easy *yog* when someone sits and remembers forcefully (and) he is not able to remember, he is experiencing difficulty or is feeling pain in the legs?
Student: Difficult. And if someone has time, he/she can sit and remember leisurely, can't they?
Baba: Yes, then the topic is different. For example, if mothers do not have any work to do in the morning, they can sit and remember. But they will remember only when they have love, when they have the recognition (of the Father). And is love possible with the body only or is it possible without the body? Love is only with the body.

समय – 30.48
जिज्ञासु – बाबा जैसे योग में रहकर कर्म करे – वो तो है कर्मयोगी। लेकिन कर्म करते–करते ऐसा तो कह नहीं सकते। कभी–कभी बाप तो गेप हो ही जाता है बीच में। कर्म करते–करते कर्म ध्यान आ गये।
बाबा– एक बात सुनो। माँ बच्चों को याद करती है। बच्चा बाहर चला जाता है बुद्धियोग उधर जाता है। कर्म करते–करते याद नहीं आता है बच्चा? ये आटोमेटिक याद है, ओरीजनल याद है, प्राकृतिक याद है या आर्टीफिशियल याद है?
जिज्ञासु – ओरीजनल।
Time: 30.48
Student: Baba, for example, when we perform *karma* in remembrance, that is a *karmayogi*. But we cannot say, while doing actions sometimes a gap does appear in (the remembrance) of the Father in between. While performing actions, we became aware of the actions.
Baba: Listen one thing. A mother remembers her child. If the child goes out, the connection of the intellect goes (towards him). Doesn't she remember the child while performing actions? Is it an automatic remembrance, original remembrance, natural remembrance, or an artificial remembrance?
Student: Original.

बाबा – ओरीजनल याद है। तो ऐसे ही परमात्मा को ओरीजनल रूप में नहीं याद कर सकते? माना पहचान की कमी है तो कर्म करते हुए याद नहीं कर सकते। और पक्की पहचान है, पक्की पहचान है तो कर्म करते हुए भी बुद्धि जाएगी ज़रूर।
जिज्ञासु – लेकिन कभी–कभी ऐसा होता है कि समय मिलता है और समय मिला, एकांत हुआ , एकाग्रता से याद करें। उस समय बहुत आनंद आता है। बाप से बातें करें। बाबा ऐसा हो रहा है। बाबा मेरे मन में ऐसा आता है। वो भी बातें करने से बाप के साथ उसमें भी जो शरीर का थकान, शरीर का टेन्शन वो सब निकल जाता है। वो भी तो.........अच्छा यादों में या............ उसका भी तो ये रहता है ना जैसे समय मिले तो इस प्रकार भी होता है। अभी जैसे शाम को

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

हम ड्युटि से आते हैं। या ड्युटि में ही हमें ऐसा समय मिल जाता कि हम बैठे हुए हैं तब हम बाप से बैठके बात करते है तो....

Baba: It is an original remembrance. So, similarly, can't you remember the Supreme Soul in the original form? It means that if there is a shortcoming in recognition (the Father) then you cannot remember while performing actions. And if you have a strong recognition, if the recognition if strong, then the intellect will certainly go (towards Him) even while performing actions.

Student: But sometimes it happens that we get time and when we received time, we received solitude, we get to remember with concentration. At that time we feel very much happy (that) we should talk to the Father, "Baba it is happening like this, Baba, this thought coms in my mind." Also by talking this with the Father, we are relieved of the physical tiredness, physical tension. Is it a good remembrance as well. For example when we come from duty in the evening or during the duty alone we receive such time, when while sitting we talk to the Father (in our mind).....

बाबा– एक्च्युली बैठने का तो टाईम ही नहीं होना चाहिए अब। इतनी सेवा पड़ी हुई है। ये शरीर जो है इस शरीर का चप्पा–चप्पा ईश्वरीय सेवा में स्वाहा हो जाए। तन भी स्वाहा करना है, धन भी स्वाहा करना है, और मन की ताकत भी स्वाहा करनी है। तो टाईम कहाँ है?
जिज्ञासु – बाबा तो बोलते है कि बच्चों से उतना....................
बाबा – ....बच्चों से होता नहीं।
जिज्ञासु – हाँ, वो ही।
बाबा – बच्चों नम्बरवार हैं ना।
जिज्ञासु – एक्च्युली क्या है कि बी.के. में हम लोग जब थे वो सिखाया गया। वो ही चीज अभी तक पूरी तरह.....
बाबा– ....चलती चली आ रही है।
जिज्ञासु – कुछ–कुछ चीजें थी बट जाती है तो वो दिमाग में रह जाती है।

Baba: Actually, now one should not find time to sit at all. There is so much of service remaining. Every part of this body should be sacrificed in Godly service. The body has to be sacrificed as well as the wealth has to be sacrificed, and you have to sacrifice the power of mind as well. So, where is the time?
Student: Baba says that the children are unable to………………………
Baba: …………children are unable to do to that extent.
Student: Yes, it is the same thing.
Baba: Children are also numberwise.
Student: Actually when we were in BK, it was taught to us in this way. The same thing is so far completely...
Baba: ……………………it has been going on.
Student: There were some issues, so its divides (the mind), that remains in the brain (intellect).

समय – 40.09
जिज्ञासु – बाबा हैदराबाद में जो तीन घंटे कंटिन्युअसली मुरली चली। डिस्कशन चली सॉरी। मुरली नहीं डिस्कशन चली। तो वो तो भाई मतलब........................
बाबा – वो कोई डायरी खोल के थोडे ही बैठता है।
जिज्ञासु – डायरी खोल कर तो नहीं। ऑटोमेटिकली आते जा रहे थे, आते जा रहे थे क्वेशचन्स उनके।
बाबा– धड़ाधड़–धड़ाधड़ बोलता चला जाता है। बाकी सब चुपचाप बैठे है। एक ही बोलता चला जाता है। इससे साबित नहीं होता है क्या? और सामान्य स्टेज में जब होता है तो उसके अंदर कोई प्रश्न नहीं आते। व्यक्ति एक ही है लेकिन उसके रूप दो है।

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Time: 40.09
Student: Baba, the Murli which continued for three hours continuously at Hyderabad. Sorry, it was a discussion. It was not a Murli, but a discussion. That brother…………………
Baba: He doesn't sit with an open diary.
Student: ……… not from the diary but it were automatically coming out continuously, his questions were emerging.
Baba: He goes on speaking continuously. All the others sit silently. Only one person (the brother) goes on speaking. Doesn't it prove? And when he is in an ordinary stage no questions emerge within him. The person is the same but he has two forms.

जिज्ञासु – लेकिन कई बार कहते है प्रवेशता में थोड़ा सा तो कुछ चेहरा (चेंज) होता है। लेकिन वो तो बिल्कुल नोरमल दिख रहा था।
बाबा – नॉर्मल ही होगा मने जब बीजरूप स्टेज में प्रवेशता होती है तो चेहरा–मोहरा बदलता थोड़े ही है।
जिज्ञासु – जो आत्मा प्रवेश करी है वो क्या एडवान्स की शरीर छोड़ी हुई आत्मा` रही?
बाबा – एडवान्स की शरीर छोड़ी हुई नहीं है। बी.के. की ही शरीर छोड़ी हुई आत्मा है।
जिज्ञासु – माना वो आत्मा ज्ञान लेना चाहती है।
बाबा – हाँ जी। हर बात मान भी तो जाती है समझाने से।
जिज्ञासु– सभी आत्माऐं पहले विरोध करती हैं क्या बाबा?
बाबा – जब तक समझमें नहीं आएगा तो वो विरोध करेंगे ना। दूसरे धर्म के होंगे, दूसरे के फोलोवर्स होंगे। गुरूओं के फोलोवर्स होंगे। वो तो बड़े गुस्से में आ जाते हैं।
Student: But many times it has been said that when entry (of other souls in someone) takes place, then the face changes a little bit. But he was appearing very normal.
Baba: He will be normal, it means when the entry (of a soul in someone) takes place in a seed-form stage, then his/her facial expression does not change.
Student: The soul that had entered, was it a soul that has left the body from the (members of the) advance (party)?
Baba: It is not a soul that has left the body from the (members of) advance (party). It is a soul from the BKs alone who has left the body.
Student: It means that the soul wants to take knowledge.
Baba: Yes. It also accepts everything on being explained.
Student: Baba, do all the souls oppose at first?
Baba: Until they do not understand, they will oppose, won't they? If they are the ones belonging to other religions; is they are the followers of other (religious fathers), if they are the followers of *gurus*; so, they become very angry.
……………………………………………………………………………………………
Note: The words in italics are Hindi words. Some words have been added in the brackets by the translator for better understanding of the translation.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info